ॐ

दरोग़गो नहीं सच्चों को मात करसके
हमारे आगे न हीं झूठ बात करसके
खुद अपने मुंह से दिल अपने को आप खुश करलें
हम ऐसी बातें नहीं वाहियात करसके

सत्यासत्यनिर्णय

जिसमें

लाला जनेश्वर दास साहब की छपवाई हुई
किताब दूध का दूध पानी का पानी की दरोग़गोइयों
को साबित करके जवाब लिखे हैं

जिसको

लाला कन्हैया लाल साहब जौहरी साकिन
बैदवाड़े देहली ने छपवाये हैं

…नप्रेस देहली में लाला जैनारायन के प्रबंध से
छापेगये ॥

ॐ

लाला जनेश्वर दास साहब ने किताब दूध का दूध पानी का पानी जो छपवाया है उसको देख कर हमको निहायत अफ़सोस इस बात का हुआ कि आप ख़ुद ही लिखते हैं कि झूठ से ज़ियादह दुनिया में कोई ऐब नहीं है. पंच महापाप में झूठ को महापाप कहा है ॥ और सप्त बिष्न मेंभी यह एक बिष्न क़रार दियागयाहै और धर्म के दसों लक्षन में सत्त को धर्म का एक लक्षण फ़र्माया है. और आपहीने दरोग़ को फ़रोग़ इसक़दर दियाहै कि जिसका कुछ शुमार नहीं उस किताब का कोई फ़िक़रा झूठ से ख़ाली नहीं और थानकपंथी भाइयों को नहरी फ़र्माते हैं कि वह क्यों सरासर झूठ बोलरहेहैं. नहीं मालूम कि वह इस झूठ से क्या फ़ायदा उठाना मदेनज़र रखते हैं ॥ ज़ाहर असबाब बजुज़ इसके कोई बात समझ में नहीं आती कि नावाक़िफ़ लोगों के सामने

दरोग़ गोई और किज़्ब शआरी से अपनी सिदाक़त का इज़्हार करें ॥

और ख़ुदही यह तहरीर फ़र्माते हैं कि कोई शख़्स झूठ बोलकर अपनेको सच्चा क़रार नहीं देसक्ता. याने यह मुराद है कि थानकपंथी झूठ बोलकर अपने को सच्चा क़रार देते हैं ॥

अब आपनेजो दरोग़ गोइयां हमारी किताब दयाधर्म निर्णय और मूर्ती खंडन में ब्यान करी हैं. उनके जवाब भी तहरीर किये जाते हैं. और आपकी दरोग़गोइयों को आपही की तहरीरों से ज़ाहर करके साबित करते हैं ॥ कि झूठ बोलकर अपनेको सच्चा कौन क़रार देना चाहता है ॥ और नावाक़िफ़ लोगोंके सामने दरोग़गोई और किज़्ब शआरी से अपनी सिदाक़त का इज़्हार कौन करता है ॥ अब आप फ़र्माइये कि सफ़े दो सतर १५ में तहरीर फ़र्माते हैं कि पंडित श्रीचंदर साहब ने सिर्फ़ यह फ़र्माया था कि मैं मूर्ती पूजन और मंदिर का बनवाना तुम्हारे ही माने हुये शास्त्रों से साबित कर दूंगा. और श्री महावीर स्वामी

का हुक्म उबाई और आवस्यक से साबित करना महज़ जनाब आली का चढ़ाया हुआ हाशिया है याने पंडित साहब ने उबाई और आवश्यक से साबित करने का वायदा किया था।

और सफ़े ३ सतर २७ में यह तहरीर की है कि सवाल २५ में जब पंडित साहब से यह सवाल किया गया था कि आप को इन्हीं दोनों शास्त्रों से साबित करना होगा और किसी तीसरे गिरंथ के तलब करने का मजाज़ न होगा ॥ उसवक़्त पंडित साहब ने बेशक यह दावा किया था कि हां मैं इन्हीं से साबित करदूंगा ॥

अब फ़र्माइये कि तहरीर सफ़े दो की ग़लत है या सफ़े तीन की ॥ अगर सफ़े तीन की तहरीर दुरुस्त है तो आप का यह लिखना कि श्री महाबीर स्वामी का हुक्म उबाई और आवश्यक से साबित करदेना महज़ जनाब आली का चढ़ाया हुआ हाशिया है बिल्कुल ग़लत और बे हूदगी है ॥

या यह सफ़े ११ सतर ३ की वोही बात है कि

दरोग़गो फ़ो पहलीबात कारूयाल नहीं रहता कि मैं पहले यह कह चुका हूं. अब इसके खिलाफ़ कहना न चाहिये ॥

और सफ़े तीसरेकी नवीं सतर में तहरीर किया है कि जब सती पार्बतीजी महाराज ने चैत के अर्थ ज्ञान और साधू के किये. जो दर असल इसके मायने न थे. ऐसे मौक़े पर हमारे पंडित जी क्योंकर मान लेते ॥ यह तहरीर भी ग़लत है (चेइये) याने चैत के जो जो अर्थ श्री मति पार्बतीजी महाराज ने फ़र्मायेथे और कोश में भी दिखलायेथे वह पंडित साहब ने सदहा आदमियों के सामने मानलियेथे. मगर यह कहते हुये तो आपको शरम आती थी और बरदा फ़ाश होताथा कि मंज़ूर कियेहुये अर्थ का संबन्ध न मान्नेमें सरासर कुजत साबित होती है और नदामत होती है. मगर जो साहब इल्म प्राकृत से वाक़िफ़ हैं वह जानते हैं कि इस जगाह पर (चेइये) शब्द के अर्थ ज्ञान या साधू के हैं मगर मानने न मानने का आपको अख़्तियार है ॥ मसल मशहूर है

कि पंचोंका कहना सिर आँखों पर मगर पर नाला तो यहीं रहेगा ॥ और श्रीमति पार्वतीजी महाराज ने दुरुस्त फ़र्माया था कि हमारे गुरु ने हमें ऐसाही बताया है यह उन का फ़र्माना बहुत दुरुस्त था और वाजिब था ॥

हम जानते हैं कि आप द्वादशांग बानी से बिल्कुल वाक़िफ़ नहीं · द्वादशांग बानी में बहुत जगह कहा है कि जो हमसे भगवंत महावीर स्वामीने फ़र्माया है वोही हम तुमसे कहते हैं ।

अब आप की फ़िकरे साज़ी से वह लोग पंडित साहब की तक़रीर को हक़ न समझ जावेंगे जो सभा में उनकी लचर पोच और अंघड़ बातों को सुनके जान गये थे कि वह बे फ़ायदह हुज्जत कर रहे थे और उनकी कोई बात द्वादशांग बानी के सबूत से न थी · और श्रीमति पार्वतीजी महाराज ने कोई बात ख़िलाफ़ द्वादशांग बानी के नहीं कही · लेकिन पंडित साहब तो द्वादशांग बानी से वाक़िफ़ ही नहीं हैं· और द्वादशांग के नाम भी नहीं जानते क्यों कि सवाल नम्बर ६ में फ़र्मा चुके हैं कि मैं

द्वादशांग बानीके नाम नहिं जानता • तो
द्वादशांग बानीका सबूत कहांसे देते ॥
फिर सफ़े चार सतर ६ में तहरीर करतेहैं
कि मास्टर श्रीरामसाहब लकचर न देरहेथे
वहतो भेंडे सवालातका जवाब देरहेथे ॥
और सफ़े १४ सतर १२ में लिखतेहैं कि
मास्टर श्रीरामसाहब ने खड़ेहोकर एक
घंटे तक सख़्त पुरजोश तक़रीर की ॥
अब बतलाइये कि तहरीर सफ़े चार की दुरु
स्त है या सफ़े बारह की ॥ लेकिन आपकी
तहरीर का तो क़याम ही नहीं पाता और क़याम
किसतरह हो क्योंकि झूठीबात पायदार
नहींहोती और झूठे शख़्स से अपनी बात
का सबूत नहीं दियाजाता ॥
इसके बाद सफ़े चारहीमें शास्त्रार्थ न कर
सकने की बाबत तहरीर कियाहै कि जो शख़्स
कुर्कट संपात ग्राम के अर्थ मुरग़े पालनेवा
ले उस देस में रहतेहैं करता है• वहनहीं कर
सक्ता या हमारे पंडित साहब नहीं कर सक्ते
जो आज बज़ाय ख़ुद इल्म संस्कृत और प्राकृत

के मूजिद हैं ॥

ऐसी ग़लत बाज़ियोंपर हैरत आती है कि कोई शख़्स ऐसी अंघड़त बात कहे जिसका ज़िक्र ही नहीं है तो किसतरह समझमें आवे और क्या जवाब दिया जावे. याने जो प्राकृत कुर्कट सम्पात ग्राम आपने तहरीर फ़र्माई है वह शास्त्रों में हेही नहीं और है तो सबूत देवें कि कौनसे शास्त्र में है ॥

और पंडित साहब को जो संस्कृत और प्राकृत का मूजिद लिखा है इससे मालूम होता है कि लफ़्ज़ मूजिदके मायने आप नहीं जानते होंगे. मूजिद तो इजाद करनेवाले को कहते हैं और इल्म प्राकृत तो श्री आद नाथ महाराज ने प्रकट किया है न कि पंडित साहब ने ऐसी वाहियात बात तो कोई बेवक़ूफ़ भी नहीं कहेगा. और इसतरह की तारीफ़ भी हजो होजाती है. सभा में सदहा आदमियों के रोबरू पंडित साहब जवाब न देसके तब श्रीराम साहब से लकचर दिलवाने शुरू कियेथे. जिसका सबूत आप की तहरीर

सफ़े १४ सतर १२ से होसक्ते है. और सभा बर्ख़ास्त होने के वक़्त मजमे आम में पंडित साहब ने लाला प्यारेलाल साहब से कहाथा कि हम मूर्ती पूजन और मंदिर बनाने का सबूत हरदो शास्त्र के मूलपाट से जवाब लिखकर देंगे ॥ जिसकी बाबत केई मर्तबे हीले हवाले किये. मगर जवाब अबतक तहरीर करके न दिया ॥

उसकी निसबत आप ने सफ़े ४ सतर २१ में तहरीर कियाहै कि लाला प्यारेलाल साहब और कन्हैयालाल जो केई दफ़े दिनमें और रात को पंडित साहब के पास आयेथे. उनकी ग़रज़ जवाब हासिल करनेकी न थी क्योंकि उस रोज़ बाक़ी क्या रहाथा जिसका जवाब देते. बल्के उनका यह मुद्दआथा कि किसी तरह मुबाहसा दुबारा क़रार दियाजावे ॥

और सफ़े १४ सतर १५ में तहरीर फ़र्माते हैं कि मास्टर साहब का यह मंशाथा कि सभा का कोई नतीजा निकले ॥

अब इसबातका जवाब दीजिये कि कौनसी तहरीर

सही है ॥

आप ख़ुदही तहरीर करते हैं कि उस रोज़ बाक़ी क्या रहाथा जिसका जवाब देते· यानी जिस बात की बहस थी उसका जवाब देदिया गयाथा और आपही यह तहरीर करते हैं कि मास्टर साहब का मंशा यहथा कि सभाका कोई नतीजा निकले· यानी उसवक़्त तक कोई नतीजा नहीं निकलाथा·

पंडित साहब के मकानपर हमारे जाने का इक़बाल करने से आपको यह हीला करना पड़ा कि उनकी ग़रज़ जवाब हासिल करने की नथी बल्के यह मुद्दआ था कि किसी तरह मुबाहसा दुबारा क़रार दिया जावे ॥

इससे बहतर यह था कि पंडित साहब के मकान पर हमारा जाना ही ग़लत है तहरीर करदेते ताकि दुबारा मुबाहसा होनेका हीला बयान करना न पड़ता मगर बाज़ शख़्स यह जानते हैं कि अक़लमंद हम ही हैं दुनिया के और तमाम लोग बेवक़ूफ़ हैं वह क्या समझेंगे कि यह बात बनावट की है बल्के

फ़रेब में आकर हमारी तहरीर को सही जानेंगे. लेकिन इस बात को तो सब जानते हैं कि मुकाबले से भागने वाले का पीछा भगाने वाला करता है. और भागने वाला क्या पीछा करेगा बल्के भागने वाले को तो रोबरू होने से भी लिहाज़ आता है और अपनी ज़बान से तो पशेमान होने का इक़रार कोई भी नहीं करता. मगर शर्मिंदह होने के सबब से उसका दिल यह चाहता है कि एक दफ़े मुक़ाबला फिर होजावे और कोई चाल काम आजाय॥

जैसाकि आपने सफ़े १६ सतर १२ में तहरीर फ़र्माया है कि मुबाहसा दुबारा क़रार पाजावे

मुबाहसे का तो कुछ मुज़ायका नहीं क्योंकि पहले पंडित महचन्द साहब और उमराओ सिंह साहब ने भी वायदा किया था कि मुबाहसा करेंगे लेकिन बवक़्त मुबाहसे के बेचारों की ज़बान से एक लफ़्ज़ भी न निकला ऐसे ही मुबाहसे को आप भी तैयार होंगे॥

लेकिन मुबाहसा उससे होसक्ता है जो शास्त्रों से वाक़िफ़ हो और इक़रार तहरीरी

पर नावाक़िफ़ लोगोंको अपनी तहरीर
की रास्ती का यक़ीन दिलाने के लिये बहुत
पक्का धोका दिया है · अगरचे नावाक़िफ़ लो
ग तो इस धोके में आजावेंगे · लेकिन यह
न सोचा कि इस मामले से जो लोग वाक़ि
फ़ हैं और जिन्होंने यह तमाम सरगुज़श्त
अपनी आंखों से देखी है उनपर हमारा धोका
और फ़रेब ज़ाहर होगा ॥ और आप इसबात
काभी यक़ीन कामिल रखें कि सौ मर्तबे भी
मुबाहसा करेंगे पर कामयाब न होंगे और
हटधर्मी करनी बात दूसरी है ॥
और सफ़े ५ सतर ५ में जो तहरीर कियाहै कि
श्री जनिन्द्र देव महाराज का उपदेश है आदेश
नहीं भगवान ने द्वादशांग बानी में पुन्य
और पाप का स्वरूप यथार्थ बरणन कियाहै
और उसके नतीजे की तशरीह कीहै नकि
किसी को हुक्म दियाहै कि तू ऐसा कर और जि
न्हों ने जिण मंदिर या जिण प्रतमा बनाई हैं
वह उन्हींके पुन्य रूप उपदेश के मुआफ़िक़
बनाई है ॥

आपको मुनासिबथा कि शास्त्रके मूलपाटके हवालेसे तहरीर फ़र्माते कि महाबीरस्वामी के कौनसे सरावगने मंदिर बनवाया और प्रत्मा पूजी और भगवंतमहाबीरस्वामीने उसके मंदिर बनवाने और प्रत्मा पूजनेका क्या फ़ल बरणन किया ॥ मगर जो बात शास्त्रोंमें हैहीनहीं उस्का हवाला कहांसे लिखते ॥ भगवंतोंका उपदेश या आदेश हिंस्याका द्वादशांग बानीमें किसी जगह नहीहै और जबकि हिंस्याका उपदेशही नहींहै तो मूर्तीका पूजना और मंदिरका बनवाना धर्मके ख़िलाफ़ क्योंकर नहींहै और इसी बातका सबूत हम पंडित साहब से चाहतेहैं

और आपने लिखाहै कि हमारे पंडितसाहबने जो कुछ जवाबदियाहै और जो कुछ सच लिखेहैं वह नागरी में लिखेहैं· वह नागरी किताब अबतक देखनेमें नहीं आई· अलबत्ते जब वह पाखंड पत्री देखेंगे तब मालूम होगा कि उसमें क्याक्या घड़ंते घड़ीहैं ॥ लाला जनेश्वर दास साहबकी दानाई और अक़्लमंदीतो आपके हिंस्या धर्मके समझनेसे और इन माकूल सबूतोंसे जो

तहरीर फ़र्मायेहैं बख़ूबी ज़ाहरहोगई जिनके तहरीरकरनेसे इन्कार भी नहीं करसक्ते कि तहरीरी बातहै ॥ अगरज़बानी बातहो तो इन्कार करदेना कुछबात नहीं है. ऐसे समझके लोगों पर बड़ा ताअज्जुब आताहै कि जो अपने धर्मको अहिन्स्या रूप भी जानते हैं ॥

और आपही सफ़े १५ सतर २१ में तहरीर करते हैं कि हम तसलीम करते हैं कि भगवंतों का बचन है कि किसी जीवको मत हनों और ख़ुदही यहभी कहतेहैं कि यहभी हम जानतेहैं कि आरम्भ में सरासर हिन्स्या होतीहै ॥ फिर यह कहते हैं कि हमतो इरादतन ऐसा नहींकरते ॥

कोई बेवक़ूफ़ से बेवक़ूफ़ भी ऐसा न होगा कि एक काम को आपही बुरा समझे और तर्क न करे ग़ौरकरनेकी बातहै कि अगर नादानिस्तगी से कोई बात होजावे तोकह सक्ते हैं कि हम नावाक़िफ़ थे और जो लोग यहभी जानतेहैं कि इन कामोंमें हिन्स्या होतीहै और उनको करतेभी हैं तो उनकी समझका फ़र्क़ है या नहीं ॥

मगर थानकपंथी भाइयोंकी निसबत सफ़े १६ में

लिखा है कि जब उनका कोई साधू मरजाता है तो उसको तमाम रात रखकर सुबह को नामवरी के लिये उसका बिवान बनाकर लेजाते हैं ॥

हम अपने साधवों को तमाम रात रखकर सुबह को नामवरी के लिये बिवान बनाकर बेशक लेजाते हैं लेकिन हम इसमें धर्म नहीं मानते हैं जैसाकि आप तहरीर फ़र्माते हैं कि प्रत्मा की पूजा करनेमें या रथजात्रा का मेला करनेसे हमारा यह मनशा नहीं है कि किसी जीव को बाधा पहुंचायें. मगर जानते तो हैं कि जीवों की हिंस्या होती है जब आप दीदह दानिस्ते हिंस्या के काम करते हैं. तो आपका धर्म अहिंस्यारूप क्योंकर है और जिन कामोंमें हिंस्या होती है उनके करनेमें धर्म क्योंकर रहसक्ता है ॥

और अब हम आपसे यह दरयाफ़्त करते हैं कि आप फल. फूल. पानी. केसर. चन्दन. धूप वग़ैरा चढ़ाकर तिर्थंकर देव महाराजकी पूजा करते हैं और जोग मुंद्रा मूर्ती बनाकर रथ या पालकी वग़ैरह सवारियों में सवार करके फिराते हैं और उसमें अपना धर्म समझते हैं जिसमें कि:

काया के जीवोंको बाधा पहुंचती है ॥ और उन त्यागी महात्माओंको एक तरहके दोषका भागी करते हैं तिर्थंकर देव महाराजनने तो जब संजम लिया याने संसारका त्याग न किया उसवक्त उन्होंने सबका त्याग करदिया ॥ अब त्यागियों की जोग सुन्दर मूर्ती बनाकर भोगी किस तरह करते हो ॥

शास्त्र के मूलपाठ में तो बहुत जगह देवता या राजा आदिक भगवान महाराज के समोसरन में गये हैं वह सुचित्त द्रव समोसरन के बाहर छोड़कर गये हैं ॥ आपतो यह सुचित्त द्रव मूर्ती पर चढ़ाते हैं और ऐसे त्यागियों की मूर्ती बनाकर भोगी बनाते है॰ इससे ज्यादह पाप क्या होगा त्यागी पुरष का पुत्र या शिष्य ऐसे भोगोंको अवंतना करे जिनको वह त्यागी पुरुष त्याग करचुके हों तो वह अवंतना करनेवाला पाप का भागी क्यों ना होगा ॥

और सफे ६ सतर १० में लिखा है कि थानक पंथियोंके साधू जो मुंह पर पट्टी बांधते हैं वह पाप के भागी हैं इसलिये कि थूक में जो मुंह से

बाहर निकलते ही अनन्ता अनन्त निगोदिया जीव पंच इन्द्री नव प्राण के धारिक मनुष्य ज़ात के जीव पैदा होजाते हैं ॥

आपकी ऐसी वाहियात बात लिखनेपर अफ़सोस है कि आप यहभी नहींजानते कि निगोदिया जीव कै इन्द्री का धारिक होताहे और कहां पैदा होताहै ॥

निगोदिया जावतो एक इन्द्री चार प्राण का धारिक है जिसको आपने पंच इन्द्री और नो प्राण का धारिक करके लिखाहै और जो निगोदिया जीव ...में पैदा होताहे द्वादशांग बानीमें कहीनहिं कहा ...रे साधू जो मुंह पर पट्टी बांधतेहैं वह भी ...तीर्थंकर देव महाराज की आज्ञासे बांधतेहैं ॥

लेकिन बड़ा अफ़सोस तो आपकी समझपरहै कि साधवों को झूठे दोश लगाकर लिखतेहो कि उनके मुरीद किसतरह कह सक्ते हैं कि हम ...हिंस्या धर्म पालतेहैं दर हक़ीक़त यह लोग जिन धर्म के लिये एक मज़ाक़ का सबब हैं ॥ ...र आप ऐसे काम करके जिनमें जाहर हिंस्या ...तीहै त्यागी पुरुषों को दोश लगाते हैं और

आपने तईं अहिंस्या धर्म का पालने वाला जान
ते हैं और जैनी समझते हैं॥ हकीक़त में जिन
धर्म की हंसाई तो आपही करते हैं॥

लाला जनेश्वर दास साहब आपने कोई बात
भी सबूत के साथ नहीं लिखी बज़ाहर ऐसा मा
लूम होता है कि आप शास्त्रों से नावाक़िफ़
हैं अगर शास्त्रों से वाक़िफ़ होते तो हरएक बात
शास्त्र के हवाले के साथ लिखते और आपकी
तहरीरों से आपकी इलमियत और दानाई और
हटधर्मी आम लोगों को मालूम होगई हमको
ज़ियादह ज़ाहर करने की ज़रूरत नहीं कि ... र
का क़ौल है॥ जबतक आदमी मुंह से बात न ...
ऐब और हुनर ग़स्का छुपा छुपा रहे॥ और
कुल म... बदज़बानी के बाद जो आपने तोबा तो
और हज़ार बार तोबा करी तो आप हज़ार बा...
...या बल्के लाख बार भी तोबा करेंगे मगर वि...
हुये कर्म का बदला ज़रूर भोगना होगा. जोकि
ख़िलाफ़ हुक्म भगवंतो के अधर्म के काम करते
हो॥ ... क
अब आप ने जो ... धर्म निर्णय की तरदीद नहीं...
... मुंह से